विचार बिन्दु

बेहतर यही होगा कि आप कोशिश करें शायद इसमे आप नाकामयाब हो जाऐं और उससे कुछ सीखें बजाये इसके कि आप कुछ करें ही नहीं।
–मार्क जकरबर्ग

कॉपी पेस्ट में सिमटती आज की युवा पीढ़ी

तकनीक का कमाल देखिए कि आज की पीढी कट पेस्ट तक सिमटती जा रही है। इसमें कोई दो राय भी नहीं होनी चाहिए कि कट पेस्ट की पीढी में गंभीरता की मांग करना बेमानी होगा। हांलाकी बात अवश्य कडवी हो सकती है पर इसमें कोई दो राय नहीं कि इंटरनेट, कम्प्यूटर और मोबाइल ने आज की पीढी को शार्टकट की जिंदगी जीना सिखा दिया है। आज का युवा कट पेस्ट के सहारे अपना काम चला रहा है। कोई जानकारी लेनी है तो सीधा गूगल गुरु की शरण में जाता है और एक ही प्रश्न से संबंधित सामग्री के अनेक स्त्रोत देख कर वह अपनी सुविधा के अनुसार जो उसे सही लगता है कट किया और उसके बाद पेस्ट करके अपना काम पूरा कर लेता है। यह सब चिंतनीय इसलिए है कि सालाना माड्यूलर सर्वेक्षण 2024 में यह सामने आया है कि डेटा, सूचना, दस्तावेजों आदि के लिए इंटरनेट की शरण में चले जाते हैं और वहां पर जो मिलता है उसी को पेस्ट कर इतिश्री कर लिया जाता है। सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार देश में उत्तराखण्ड के युवा सबसे आगे हैं और उत्तराखण्ड के करीब 66 फीसदी युवा कॉपी पेस्ट के सहारे काम चला रहे हैं। उत्तराखण्ड के पीछे-पीछे ही बिहार के युवा हैं और बिहार के 60 प्रतिशत युवा कट पेस्ट के सहारे ही काम चला रहे हैं। उत्तरप्रदेश के युवाओं के हालात भी कमोबेस यही है और उत्तरप्रदेश के 56 फीसदी युवा कट पेस्ट का सहारा ले रहे हैं।

देखा जाए तो तकनीक के उपयोग में कोई बुराई नहीं हैं अपितु तकनीक के उपयोग में आगे रहना समय की मांग होती है। पर बौद्धिक विकास या तार्किकता की पहली शर्त ही अध्ययन मनन होती है। सबसे बड़ी समस्या यही है कि आज का युवा पढने-पढाने से दूर होता जा रहा है। जिस तरह से परीक्षा के दिनों में वन विक सीरीज से काम चलाया जाता था ठीक उसी तरह से अब गूगल गुरु के सहारें काम चलाया जा रहा है। सबसे अधिक चिंतनीय यह है कि ऐसे में युवाओं के समग्र बौद्धिक विकास की बात करना बेमानी हो जाता है। जब एक क्लिक में सामग्री मिल जाती है तो फिर पढने-पढाने की जहमत कौन उठाएं। कोरोना के कारण ऑनलाइन कक्षाओं का जो चलन चला था उसके नकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं। रही-सही कसर सोशियल मीडिया ने पूरी कर दी है। सोशियल मीडिया पर परोसी जाने वाली सामग्री में कितना सही है और क्या सही है यह तय करना अपने आम में जोखिम भरा काम है। परिवारों के हालात यह होते जा रहे हैं कि किताब तो दूर होती जा रही है और क्या बच्चे और क्या बड़े सब मोबाइल पर लगे रहते हैं और आपसी संवाद करने की भी फुर्सत नहीं होती। देखा जाए तो एकाकीपन बढ़ता जा रहा है। सामाजिकता तो लगभग समाप्त ही होती जा रही है। सोशियल मीडिया में शार्टकट मैसेजों का चलन इस कदर बढ़ गया है कि कई बार तो शार्टकट मैसेज को डिकोड करने में ही पसीने आ जाते हैं। अब 2025 की ही बात ले तो सोशियल मीडिया पर ड्ब्लूटीएफ का चलन जोरों से चल रहा है। ड्ब्लूटीएफ का एक तो सीधा साधा अर्थ है क्या मजाक है। पर दूसरी और नए साल के बुधवार से आरंभ होने को लेकर ड्ब्लूटीएफ का धडल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। ड्ब्लूटीएफ के माध्यम से लोगों को डराया भी जा रहा है कि जिस तरह से 2020 में बुधवार से नए साल की शुरुआत हुई थी और उस साल कोरोना के भयावह दौर से गुजरना पड़ा। इस तरह से ड्ब्लूटीएफ के माध्यम से कोरोना काल जैसी त्रासदी की संभावना से लोगों को डराया जा रहा है। दरअसल कम्यूनिकेशन भी एक कला है। एक समय था जब बच्चों की कम्यूनिकेशन स्कील विकसित की जाती थी। अब सोशियल मीडिया के इस जमाने में कम्यूनिकेशन स्कील तो दूर की बात शार्टकट के आधार पर ही काम चलाया जा रहा है। मजे की बात यह है कि सामने वाले से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे सब कुछ मालूम है।

> **तकनीक का उपयोग सहजता के लिए किया जाना तो उचित है पर तकनीक के नाम पर केवल शार्ट कट या कॉपी पेस्ट तक सीमित होना अपने आप में गंभीर चिंता का कारण बन जाता है। आवश्यकता बौद्धिक विकास और तर्कशीलता को बढ़ावा देना होना चाहिए और तकनीक उसमें सहायक तक ही सीमित रहे तो नई पीढ़ी अधिक बौद्धिक, तर्कशील और अपने दायित्वों के प्रति अधिक गंभीर होगी और इस दिशा में आगे बढ़ते हुए युवाओं का ब्रेनवाश करना होगा।**

आने वाली पीढ़ी को गंभीर और चिंतनशील बनाना है तो उसे कट पेस्ट के दायरें से निकालना ही होगा। कहा जाता है कि जितना अधिक अध्ययन मनन होता है व्यक्ति उतना ही निखर कर आता है। जब इंटरनेट की दुनिया में जो जानकारियां हैं उन्हीं का उपयोग किया जाता है तो ऐसी हालत में चिंतन, मनन, तक-वितर्क, वैचारिक परिपक्वता, शोध आदि की कल्पना करना अपने आप में गलत होगा। ऐसे में तकनीक का उपयोग सहजता के लिए किया जाना तो उचित है पर तकनीक के नाम पर केवल शार्ट कट या कॉपी पेस्ट तक सीमित होना अपने आप में गंभीर चिंता का कारण बन जाता है। आवश्यकता बौद्धिक विकास और तर्कशीलता को बढावा देना होना चाहिए और तकनीक उसमें सहायक तक ही सीमित रहे तो नई पीढी अधिक बौद्धिक, तर्कशील और अपने दायित्वों के प्रति अधिक गंभीर होगी और इस दिशा में आगे बढते हुए युवाओं का ब्रेनवाश करना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

भारतीय समाज में बड़े होने का अभिशाप

डॉ. पंकज राजवंशी

जब भारतीय परिवार में पहला बेटा जन्म लेता है, तो उसके साथ ही एक अदृश्य बड़े होने का अधिकार उसे दे दिया जाता है। यह अधिकार, जिसे समाज और माता-पिता मिलकर पोषित करते हैं, शुरू में जिम्मेदारी के रूप में आता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, यह जिम्मेदारी बड़े होने का अभिशाप बन जाती है-एक ऐसा बोझ, जिसे उठाते हुए बड़े बेटे की व्यक्तिगत इच्छाएं और सपने कहीं खो जाते हैं।

बचपन से ही बड़े बेटे को सिखाया जाता है कि वह घर का सबसे समझदार और जिम्मेदार सदस्य है। माता-पिता और समाज उसे परिवार का नेता बनाते हैं। लेकिन यह नेतृत्व अक्सर बोझिल हो जाता है। छोटे भाई-बहनों की देखभाल, उनके भविष्य के लिए अपने सपनों का त्याग और माता-पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने की लगातार कोशिश-यह सब मिलकर उसे न केवल थका देता है, बल्कि उसकी जिंदगी के हर पहलू को नियंत्रित करने लगता है।

माता-पिता बड़े बेटे को परिवार का आधार मानते हैं। तुम बड़े हो, तुम्हें समझना चाहिए, यह वाक्य बार-बार दोहराया जाता है। इससे वह बचपन से ही त्याग और जिम्मेदारी को अपना धर्म समझने लगता है। उसकी पढाई, नौकरी, यहां तक कि जीवनसाथी का चयन भी अक्सर परिवार की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह त्याग और बलिदान उसकी पहचान बन जाता है।

लेकिन समस्या तब शुरू होती है, जब यह बलिदान बाद में अनदेखा कर दिया जाता है। बड़े बेटे को लगता है कि उसने परिवार के लिए जो कुछ भी किया, उसका सम्मान नहीं हुआ। छोटे भाई-बहन, जो बड़े होने पर अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं, उसके निर्देशों को नजरअंदाज करना शुरू कर देते हैं। मैंने तुम्हारे लिए इतना कुछ किया, और अब तुम मेरी बात भी नहीं मान सकते, यह वाक्य उन बड़े भाइयों की आम आवाज बन जाता है, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा परिवार के लिए समर्पित कर दिया।

बड़ा भाई, जिसे बचपन से यह सिखाया गया था कि वह घर का मुखिया है, जब अपने छोटे भाई-बहनों की स्वतंत्रता की मांग को देखता है, तो उसे यह एक विद्रोह जैसा लगता है। वह इसे अपनी भूमिका और बलिदान के अपमान के रूप में लेता है। लेकिन छोटे भाई-बहनों के नजरिए से यह बड़े होने का अधिकार एक अनुचित दबाव और नियंत्रण का प्रतीक है।

माता-पिता भी इस स्थिति को जटिल बना देते हैं। वे बड़े बेटे से यह अपेक्षा करते हैं कि वह हर समस्या का हल निकाले और परिवार को एकजुट रखे। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि इस भूमिका को निभाने में बड़ा बेटा भी भावनात्मक और मानसिक थकान का अनुभव कर सकता है। समाज भी इस बड़े होने के अधिकार को और मजबूत करता है। बड़े बेटे को घर का नेता और रक्षक माना जाता है। लेकिन यह अधिकार धीरे-धीरे परिवार पर नियंत्रण की कोशिश में बदल जाता है। यह मैं बड़ा हूं, इसलिए मेरी बात मानो वाला दृष्टिकोण छोटे भाई-बहनों के साथ टकराव का कारण बनता है।

अमेरिकी संस्कृति में यह स्थिति अलग है। वहां बड़े और छोटे भाई-बहनों के बीच समानता पर जोर दिया जाता है। बड़े भाई-बहन का रोल मॉडल बनना वहां स्वाभाविक है, लेकिन इसे किसी अधिकार या नियंत्रण के रूप में नहीं देखा जाता। वहां हर व्यक्ति अपने जीवन का मालिक होता है।

भारतीय समाज में यह मॉडल अब आधुनिक समय में विफल हो रहा है। छोटे भाई-बहन अपनी स्वतंत्रता और अधिकार चाहते हैं। वे अपने जीवन के फैसलों में बड़े भाई का हस्तक्षेप नहीं चाहते। लेकिन बड़ा भाई, जिसने परिवार के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया, इसे अपना अपमान मानता है। इस बड़े होने के अधिकार को बदलने की जरूरत है। बड़े भाई को एक प्रेरणा स्त्रोत और सहयोगी बनाना चाहिए, न कि एक प्राधिकारी। माता-पिता को अपनी जिम्मेदारियां समान रूप से बांटनी चाहिए, न कि सब कुछ बड़े बेटे पर डाल देना चाहिए। अगर बड़े होने के इस अधिकार को सही दिशा में मोड़ा जाए, तो यह परिवार में सम्मान और सामंजस्य का आधार बन सकता है। लेकिन अगर इसे उसी तरह रखा गया, जैसा यह सदियों से है, तो यह रिश्तों में दरारें पैदा करता रहेगा। बड़े होने का अभिशाप तभी समाप्त होगा, जब इसे अधिकार की जगह सम्मान और सहयोग का प्रतीक बनाया जाएगा।

डॉ. पंकज राजवंशी, सिएटल (अमरीका) में एक गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट हैं

बेजुबान पक्षियों को भी जीने दो.....

अविनाश जोशी

पक्षियों का कलरव एवम चहक हमे प्रकृति से जोड़ती है एवम पक्षी प्रेम की तरफ मोड़ती है। पौराणिक समय में भी मोर उल्लू आदि पक्षी हमारे आराध्य देव के अत्यंत प्रिय थे एवम अनेकों घटनाओं में उनका वर्णन आता है। हमारी सुबह में वो रंग ही नही रहेंगे अगर पक्षी नही चहचहाए।

कोरोना महामारी के बढ़ते संक्रमण के बीच प्रवासी पक्षियों की हिफाजत सरकार के सामने बहुत बड़ी चुनौती थी। यह कोई आसान काम नहीं था। गौरतलब है कि वन्य प्राणियों पर बढ़ते खतरों का असर जैव विविधता पर साफ नजर आने लगा है। ऐसे में जैव विविधता को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाने वाले पक्षियों पर बढ़ते खतरे पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

पिछले वर्षो के दोरान जब देश में लोग कोरोना की दहशत में थे, तब भी प्रवासी पक्षी देश के कई अभयारण्यों और तालाबों में बेखौफ पहुंच रहे थे। यह पहली दफा था, जब प्रवासी पक्षियों के लिए हवा और हरीतिमा सबसे अनुकूल मिली। मगर इसका नाजायज फायदा शिकारियों ने उठाया। पूर्णबंदी और आंशिक बंदी के बावजूद प्रवासी पक्षियों का शिकार और व्यापार जारी रहा।

सैकड़ों ग्रीष्म कालीन प्रवासी पक्षी लौट कर अपने घर नहीं जा सके। अभयारण्यों में शीत कालीन प्रवासी पक्षियों का आना और जलविहार जारी है, साथ में उनके शिकार और व्यापार की खबरें भी आ रही हैं। गौरतलब है पक्षियों के शिकार की वजह से पिछले तीस सालों में पक्षियों की दुर्लभ इक्कीस प्रजातियां लुप्त हो गई हैं, जबकि सौ साल में इसके पहले औसतन एक प्रजाति लुप्त होती थी। कुछ खास तरह के भारतीय पक्षियों का शिकार पिछले तीस सालों में काफी तेज हुआ है। इसी तरह प्रवासी पक्षियों में कॉमन कूट, ब्लैक बिंग्ड स्टिल्ट, नदन फावडे, रूडी शेल्डक, लेसर व्हिस्लिं गडक, वाइड एवोसेट और कैस्पियन मूल, जो भारत में हर साल प्रवास के लिए आते हैं, के शिकार की खबरें भी आती रही हैं।

पिछले वर्ष जलवायु सम्मेलन में एक सौ तीस देशों ने जलवायु परिवर्तन के चलते प्रवासी पक्षियों की घटती संख्या और लुप्त हो रही प्रजातियों को लेकर चिंता व्यक्त की गई। गौरतलब है इंटर नेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन आफ नेचर (आईयूसीएन) के अनुसार शिकार और पारिस्थितिकी प्रणाली के कारण देश में निवास करने वाली एक सौ अस्सी पक्षी प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर या खतरे में हैं। प्रवासी और देशी पक्षियों के संरक्षण के लिए और उन्हें स्वतंत्रता देने के लिए कानून बनाए गए हैं, लेकिन उन कानूनों का कड़ाई से पालन नहीं हो पा रहा है। जैव विविधता को संरक्षित करने और पक्षियों को इंसान की तरह जीने का अधिकार देने सालिम अली की तरह पक्षियों के लिए जीवन समर्पित करने वाले लोग बहुत कम हैं।

प्रवासी पक्षी अपनी लंबी यात्रा से विभिन्न संस्कृतियों और परिवेशों को जोड़ने का कार्य करते हैं। ये पक्षी रेगिस्तान, समुद्र और पहाड़ों को पार करके एक देश से दूसरे देश का सफर करते हैं। पक्षियों की ज्ञात प्रजातियों में उन्नीस फीसद नियमित रूप से प्रवास करते हैं। गौरतलब है कि प्रवासी पक्षी जैव विविधता का हिस्सा हैं। अगर इनका संरक्षण पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं किया गया तो, कुछ ही सालों में बचे प्रवासी और देशी पक्षी हमेशा के लिए लुप्त हो जाएंगे।

विश्व प्रसिद्ध सांभर झील हो या गिरिडीह (झारखंड) और भरतपुर (राजस्थान) के प्रसिद्ध केवलादेव अभयारण्य में पहले से बहुत कम प्रवासी पक्षी अब आते हैं। वहीं पर डूंगरपुर, बांसवाड़ा और उदयपुर में पहले से ज्यादा प्रवासी पक्षी आते हैं। इसी तरह राजस्थान के छोटे से गांव मेनार में ग्रामीण पर्यावरण संरक्षण की एक नई इबारत लिखने लगे हैं। भारत में पक्षियों की बारह सौ से ज्यादा प्रजातियों तथा उपप्रजातियों के लगभग इक्कीस सौ प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। इनमें से लगभग साढ़े तीन सौ प्रजातियां प्रवासी हैं, जो देश के अलग-अलग क्षेत्रों में शीत और ग्रीष्म ऋतु में आते हैं।

कुछ प्रजातियां जैसे पाइड क्रेस्टेड कक्कु (चातक) भारत में बरसात के समय प्रवास पर आते हैं। स्थानीय स्तर के प्रवासी पक्षी भी बड़ी संख्या में देश के एक कोने से दूसरे कोने का सफर करते हैं। बिहार में पैंतीस से चालीस प्रतिशत प्रजातियां प्रवासी पक्षियों की हैं। इनकी सुरक्षा और संरक्षण करना एक बड़ी चुनौती है। जानकारी के मुताबिक यों तो देश में जहां भी प्रवासी पक्षी प्रवास करते हैं, वहां उनका शिकार आम बात है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में इनका शिकार तेजी से हो रहा है। जिन अभयारण्यों में प्रवासियों का शिकार सबसे ज्यादा हो रहा है, उनमें भरतपुर के केवलानंद, बिहार के फतुहा, बेगूसराय, कुशेश्वरस्थान, पटना सिटी जैसे इलाके शामिल हैं।

प्रवासी पक्षियों का संरक्षण कई स्तरों पर चुनौती बना हुआ है। भारत एक गर्म जलवायु का क्षेत्र है। इसलिए यहां उन क्षेत्रों के पक्षी प्रवास में लाखों की संख्या में आते हैं, जहां की जलवायु अत्यंत ठंडी है। लेकिन जलवायु परिवर्तन हमारे यहां भी बड़ी समस्या बनती जा रही है। इसका असर उन प्रवासी पक्षियों पर देखा जा रहा है, जो अनुकूलता के लिए यहां चार से छह महीने रहते हैं। ठंडे देशों के ये पक्षी कई ऐसी प्रजातियों के हैं, जिनका शरीर काफी वजनी है। यही कारण है कि इनका शिकार होता है।

भारत में एक समय चिड़ियों की बारह सौ प्रजातियां पाई जाती थीं। अब इसमें से पचास से अधिक प्रजातियां लुप्त हो गई हैं। गिद्धों की कुछ प्रजातियां, कठफोड़वा, ग्रेट इंडियन बस्टैर्ड जैसे पक्षियों की प्रजातियां लुप्त हो गई या लुप्त होने के कगार पर हैं। विकास संबंधी अस्थायी नीतियों और प्रकृति के प्रति बढ़ती असंवेदशीलता के कारण भी भारत के कई पक्षी वास खतरे में हैं। इससे पक्षियों के लुप्त होने का खतरा और बढ़ गया है। इस बात की पुष्टि 'बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' के ताजा अध्ययन से होती है, जिसमें भारत के कम से कम दस जैव विविधता वाले इलाकों पर हमेशा के लिए लुप्त हो जाने का खतरा पैदा हो गया है।

भारत में जिन पक्षी वास स्थानों का खतरा बढ़ गया है, उसमें गुजरात में कच्छ के 'फ्लेमिंगो सिटी' महाराष्ट्र का सोलापुर, मुंबई का सीवडी-माहुल क्रीक, अहमदनगर का ग्रेट इंडियन बस्टैर्ड अभयारण्य शामिल हैं। इसके अलावा हरियाणा स्थित बसई, मध्यप्रदेश स्थित सैलाना खरगोर अभयारण्य, अंडमान निकोबार का मिल्लांगचोंग, कर्नाटक का रानेबेन्नूर अभयारण्य, मध्यप्रदेश का करेरा वन्यजीव अभयारण्य भी हरियाली की कमी के कारण पक्षियों के लिए प्रतिकूल साबित हो रहे हैं।

कांजीरंगा असम का प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है। यह यूनस्को घोषित विश्व धरोहरों में शामिल है। इसमें पक्षियों की चार सौ पचास प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें बंगाल फ्लोरिकन, हार्नबिल और उल्लू की कुछ प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। बदलते मौसम, अति वर्षा, बढ़ते प्रदूषण, शिकार के कारण पक्षियों के लिए अब यह उद्यान सुरक्षित नहीं रह गया है। इसी तरह राजस्थान के भरतपुर का केवलादेव उद्यान 1985 से विश्व धरोहरों में शामिल है। यहां पक्षियों की तीन सौ पैंसठ प्रजातियां तीन शताब्दी पहले पाई जाती थीं। जो चीन, अफगानिस्तान, साइबेरिया से बड़ी तादाद में यहां आए थे। आजादी के पहले यहां पक्षियों के शिकार के लिए शाही परिवार के अलावा अन्य मांसभक्षी पक्षियों का शिकार करते थे, जिससे अनेक तरह के पक्षी हमेशा के लिए विलुप्त हो गए। कुछ लुप्त होने के कगार पर हैं, जिसमें तीतर, बटेर, मुर्गाबियां शामिल हैं। पक्षियों के संरक्षण और सुरक्षा का लेकर 1873 में वन्यजीव संरक्षण कानून बनाए गए थे, लेकिन उन कानूनों से भी वन्य जीवों के शिकार पर अंकुश नहीं लगता था। स्वतंत्र भारत में सर्वप्रथम 1952 में वन्यजीव बोर्ड की स्थापना की गई, जिसका पुनर्गठन 1991 में हुआ। इस बोर्ड की स्थापना पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अंतर्गत की गई है। जीव-जंतुओं के कल्याण की योजनाओं और उनके क्रियान्वयन के अलावा वन्य जीवों पर अत्याचार को रोकना भी इसका काम है।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वंतत्र पत्रकार

लेपर्ड घायल हालत में मिला, वन विभाग की टीम ने ट्रैंकुलाइज किया

उदयपुर, (का.सं.)। उदयपुर के नयागांव के कनबई स्थित लक्ष्मणपुरा उखेड़ी गांव में एक लेपर्ड घायल हालत में मिला। वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचे लेपर्ड को ट्रैंकुलाइज किया। पिंजरे में रखकर उसे खेरवाड़ा लाया गया। लेपर्ड का इलाज जारी है।

प्राप्त जानकारी के नुसार खेरवाड़ा उपखण्ड के कनबई क्षेत्र के लक्ष्मणपुरा उखेड़ी में तीन पैंथर आने की सूचना पर वन विभाग की टीम पहुंची। टीम ने एक पैंथर को ट्रॅक्यूलाइज किया और पिंजरे में खेरवाड़ा ले गए। उखेड़ी वन क्षेत्र में तीन पैंथर आने की सूचना पर ग्रामीण एकत्रित हो गए। ग्रामीणों ने बताया कि पैंथर ने बुधवार को एक गाय का और गुरुवार को दो बकरियों और कुत्ते का शिकार किया था। ग्रामीणों ने घेरा डाला तो दो पैंथर भाग गए। सूचना पर वन विभाग एवं पाटिया पुलिस, पहाड़ा पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। एक पैंथर घायल अवस्था में मिला। उसे खेरवाड़ा ले गए।इस दौरान क्षेत्रीय वन अधिकारी मोनिका मीणा, सतीश चतुर्वेदी, अशोक जोशी, डीपी शर्मा, धर्मेंद्र सिंह, वनपाल बहादुर मीणा, सोहन प्रजापत, जितेन्द्र देवड़ा, पहाड़ा थाना अधिकारी गणपतसिंह, कनबई चौकी इंचार्ज श्रवण बिश्नोई, कांस्टेबल सोहनलाल भी मौजूद रहे।

- **घायल लेपर्ड को ट्रैंकुलाइज कर खेरवाड़ा ले गई वन विभाग की टीम**
- **तीन लेपर्ड आने की विभाग को मिली थी सूचना, दो लेपर्ड भाग गए**

डीएफओ मुकेश सैनी ने बताया कि लेपर्ड भूख-प्यास से थक चुका था। इसका पता डॉक्टर की जांच के बाद लग पाएगा। फिलहाल लेपर्ड का इलाज जारी है। डीएफओ ने बताया कि लक्ष्मणपुरा उखेड़ी गांव के जंगल में कुछ कालबेलिये कबीले बनाकर रह रहे हैं। करीब पांच दिन पहले एक लेपर्ड इसी क्षेत्र में मृत अवस्था में मिला था। लेपर्ड के शिकार की आशंका को देखते हुए उन्हें वहां से खदेड़कर हटाया जा रहा हैं। हालांकि बिना जांच लेपर्ड की मौत का कारण शिकार होना नहीं कह सकते। हालांकि ऐसी किसी घटना से पहले ही विभाग पूरी तरह सतर्कता बरत रहा है।

लेपर्ड ने गुरुवार देर रात उखेड़ी गांव के जीवाजी पिता खुमाजी के बाड़े में घुसकर बकरियों पर हमला किया। एक बकरी मृत अवस्था में मिली। वहीं एक कुत्ते का भी शिकार कर लिया। पूरे गांव में दहशत का माहौल बना हुआ है। ग्रामीणों ने पिंजरा लगाकर लेपर्ड को पकड़ने की मांग की है।

बीकानेर में सर्द रातों में जिप्सम माफिया सक्रिय

बीकानेर, (निसं)। सर्द रातों में जिप्सम माफिया सक्रिय हैं और बेखौफ होकर अपने काम को अंजाम दे रहे हैं। दंतौर में सरकारी स्कूल के आगे जेसीबी चलाने के बाद अब रणजीतपुरा के चक 12एमजीएम में आगोर की जमीन और रास्ते को ही खोदा डाला। पटवारी ने इस मामले में मुकदमा दर्ज कराया है। दूसरी ओर खान महकमे के लोग और पुलिस मामले में दबाने में जुटी रही।

बीकानेर में इन दिनों तेज सर्दी और कोहरे का कहर है। ग्रामीण इलाकों में तो रात के समय पारा माइनस डिग्री पहुंच रहा है। लोग पूरी तरह घरों में दुबके रहते हैं। ऐसे में जिप्सम माफिया के लोग सक्रिय हैं और चांदी कूट रहे हैं। खाजूवाला, दंतौर और बज्जू में जिप्सम वाले इलाके उनके टारगेट पर हैं। पिछले दिनों दंतौर के महात्मा गांधी सरकारी स्कूल के आगे पार्किंग क्षेत्र में रात को जिप्सम का जमकर अवैध खनन किया गया। जेसीबी चलाई गई और जिप्सम निकालने के बाद मिट्टी डालकर गड्ढों को भर दिया गया।

सरपंच प्रतिनिधि रजाक खां की ओर से दंतोर पुलिस थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया था। अब माफियाओं ने रणजीतपुरा के 12एमजीएम में आगोर और रास्ते की जमीन को खोद डाला। मगनवाला हलका पटवारी जगदीश सुथार ने 31 दिसंबर और एक जनवरी को मौका निरीक्षण किया तो जिप्सम का अवैध खनन और गाड़ी-मशीनों के निशान मिले। मुरबा नंबर 61/57 में 16525 वर्ग फिट में 4 फिट की गहराई तक जिप्सम का अवैध खनन किया गया।

मुरबा नंबर 81/1,2,3,4 में गैर मुमकिन रास्ते से भी जिप्सम खोद डाला। मुरबा नंबर 61/57 आगोर की भूमि दर्ज है जिसमें पुराना कब्रिस्तान भी है। पटवारी की ओर से रणजीतपुरा पुलिस थाने में जिप्सम के अवैध खनन का मुकदमा दर्ज कराया गया है। अवैध खनन क्षेत्र के पास आरएसएमएम की जिप्सम की लीज है। पटवारी की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि आरएसएमएम व उसके अधीन संस्था एम/एस तेतरवाल श्रमिक ठेका सहकारी समिति लि. व कांट्रेक्टर वंडर सीमेंट ने लीज क्षेत्र से हटकर बिना किसी सक्षम अनुमति के जिप्सम का अवैध खनन किया है। जिप्सम माफिया जमकर अवैध खनन करने में जुटा है और खान महकमे के अधिकारी और पुलिस बेखबर हैं। दंतौर में जिप्सम का अवैध खनन हुआ तो ग्रामीणों में विरोध जताया और मुकदमा दर्ज कराया गया। रणजीतपुरा में जमकर जिप्सम खोदा गया, लेकिन खान महकमा और पुलिस बेखबर रहे। पटवारी की ओर से मुकदमा दर्ज कराए जाने के बावजूद रणजीतपुरा थाने की पुलिस मामले को दबाने में जुटी रही।

सात साल बाद भी प्रबोधकों को नहीं मिला प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग में कार्यरत प्रबोधकों को सात साल बाद भी प्रमोशन का लाभ नहीं मिला है। प्रबोधक पदोन्नति में पिछड़ रहे हैं। प्रबोधक संघ के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार व शिक्षा विभाग की उदासीनता के चलते प्रबोधक की पदोन्नति पिछले सात वर्ष से नहीं हो पाई है। राज्य में कांग्रेस व भाजपा सरकार दोनों ने ही प्रबोधक की पीड़ा नहीं समझी और पदोन्नति के बजाय पदावनत कर दिया। राज्यभर में 25 हजार प्रबोधक इससे प्रभावित हुए हैं।

वर्तमान में लगभग 10 हजार 392 प्रबोधक को अपनी पदोन्नति का इंतजार है। राज्य में पूर्व गहलोत सरकार ने पांच हजार प्रबोधक की पदोन्नति की घोषणा की थी, लेकिन उसको अमली जामा नहीं पहना सकी। इसके बाद वर्तमान भाजपा सरकार में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने शेष 5 हजार को पदोन्नति करने की थी घोषणा की थी। लेकिन इस पर भी अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। दरअसल, प्रबोधकों की पदोन्नति पंचायतीराज प्रबोधक सेवा अधिनियम 2008 के अनुसार 2017 में होनी थी लेकिन 7 पदोन्नति अभी तक नहीं हुई है। प्रबोधक को वरिष्ठ प्रबोधक बनाकर शिक्षा विभाग में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक के समकक्ष पद और कार्य दायित्व मिलना था, लेकिन वरिष्ठ प्रबोधक को भी अधिशेष के समायोजन के नाम पर लेवल वन पर लगा दिया है।

राशिफल शनिवार 4 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 9:23 तक, सिद्धि योग दिन 10:08 तक, बव करण दिन 10:51 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

रवियोग रात्रि 9:23 से आरम्भ होगा। बुध धनु राशि में दिन 12:03 पर प्रवेश करेगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:38 से 9:56 तक, चर 12:32 से 1:49 तक, लाभ-अमृत 1:49 से 4:25 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:42

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी बनी रहेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।